vinetur

2026 की पहली छमाही में इटली का वाइन निर्यात मूल्य के लिहाज़ से 6.2% गिरा

कीमतें घटने के बावजूद मांग नहीं बढ़ी ; उत्पादक पैकेजिंग, लॉजिस्टिक्स, परिवहन और कांच की बढ़ती लागत से दबाव में हैं।

सोमवार, 5 अक्टूबर 2026



इटली का वाइन उद्योग मुश्किल दौर से गुजर रहा है। खुदरा कीमतें गिर रही हैं, उत्पादन लागत बढ़ रही है और निर्यात मांग कमजोर पड़ रही है—इससे देश के सबसे अहम खाद्य एवं पेय कारोबारों में से एक पर दबाव बढ़ गया है।

Financialounge की रिपोर्ट के अनुसार, इटली में वाइन की उपभोक्ता कीमतें सितंबर में एक साल पहले की तुलना में 2.3% कम थीं, जबकि कुल महंगाई दर 4.2% थी। रिपोर्ट के मुताबिक, दुकानों में कीमतें घटने के बावजूद बिक्री में सुधार नहीं हुआ और बिक्री की मात्रा अब भी कमजोर है।

इससे वाइनरी के सामने मुश्किल खड़ी हो गई है : बाजार में मांग नरम है और परिचालन लागत बढ़ रही है। Unione Italiana Vini का हवाला देते हुए Financialounge ने बताया कि उत्पादकों पर वाइनरी के भीतर कामकाज की लागत का

सीधा असर पड़ रहा है, साथ ही कांच उत्पादन से जुड़ी अप्रत्यक्ष लागत भी बढ़ रही है। समूह ने परिवहन, लॉजिस्टिक्स, वाइन बनाने में इस्तेमाल होने वाले उत्पादों, पैकेजिंग और अन्य सामग्रियों पर बढ़ते खर्च का भी उल्लेख किया।

यह दबाव अहम है, क्योंकि वाइन इटली की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा है। रिपोर्ट के अनुसार, इस क्षेत्र का मूल्य करीब €14 billion है और इसका लगभग 55% राजस्व विदेशी बाजारों से आता है। इससे जुड़ी व्यावसायिक गतिविधियों को मिलाकर यह करीब 900,000 लोगों को रोजगार देता है।

हालांकि, इस साल निर्यात में गिरावट आई है। Financialounge के अनुसार, 2026 की पहली छमाही में इटली का वाइन निर्यात मूल्य के लिहाज़ से 6.2% और मात्रा के लिहाज़ से 4% घटा। विदेशी मांग पर काफी निर्भर उद्योग के लिए यह गिरावट बढ़ती लागत और घरेलू बिक्री में सुस्ती के दबाव को और बढ़ाती है।

यह गिरावट ऐसे समय आई है जब वैश्विक वाइन बाजार की रफ्तार भी धीमी पड़ रही है। International Organisation of Vine and Wine का अनुमान है कि 2025 में दुनिया भर में वाइन की खपत घटकर 208 million hectoliters रह गई—एक साल पहले से 2.7% कम और 2018 के स्तर से करीब 14% नीचे। संगठन ने इस गिरावट को आंशिक रूप से जीवनशैली, सामाजिक आदतों और पीढ़ीगत व्यवहार में बदलाव से जोड़ा है।

ये बदलाव ऐसे समय में वाइन उत्पादकों को प्रभावित कर रहे हैं, जब कई बाजारों में उपभोक्ता शराब के सेवन पर व्यापक रूप से फिर से विचार कर रहे हैं। कम बार शराब पीना, संयमित सेवन और युवा वयस्कों की बदलती पसंद यूरोप और अन्य प्रमुख वाइन क्षेत्रों के उत्पादकों के लिए लगातार चिंता का विषय बने हुए हैं।

इटली के लिए यह रुझान खास तौर पर अहम है, क्योंकि वह दुनिया के सबसे बड़े वाइन निर्यातकों में से एक है। निर्यात से होने वाली आय में लंबे समय तक गिरावट और इनपुट लागत में बढ़ोतरी का असर वाइनरी और वितरकों के मुनाफे पर पड़ सकता है तथा अंतरराष्ट्रीय पेय बाजारों में प्रतिस्पर्धा तेज कर सकता है। इससे व्यापक पेय कारोबार पर भी दबाव बढ़ सकता है, जहां वाइन, बीयर और स्पिरिट बनाने वाली कंपनियां पहले से ही पैकेजिंग, माल ढुलाई और ऊर्जा लागत पर करीबी नजर रख रही हैं।

मौजूदा स्थिति असामान्य है, क्योंकि कीमतें घटने से मांग नहीं बढ़ी। उपभोक्ता वस्तुओं की कई श्रेणियों में कम कीमतें आम तौर पर बिक्री को सहारा देती हैं। लेकिन इटली की वाइन के ताजा आंकड़े बताते हैं कि समस्या सिर्फ कीमतों तक सीमित नहीं है ; वे देश के भीतर और विदेशों में कमजोर होती बुनियादी मांग की ओर भी इशारा करते हैं।

Financialounge ने इस समस्या को ऐसी चुनौती बताया है जिसका असर पूरी आपूर्ति शृंखला पर पड़ता है। कांच निर्माता, पैकेजिंग आपूर्तिकर्ता, परिवहन प्रदाता और लॉजिस्टिक्स संचालक—सभी का कारोबार कुछ हद तक वाइन व्यापार की सेहत पर निर्भर करता है। जब बिक्री की मात्रा घटती है और निर्यात के ऑर्डर धीमे पड़ते हैं, तो इसका असर अंगूर के बागों और बॉटलिंग संयंत्रों से आगे तक फैल सकता है।

रिपोर्ट ने मौजूदा बाजार की कमजोरी को लंबे ऐतिहासिक संदर्भ में भी रखा। इसमें कहा गया कि यूरोपीय वाइन उद्योग ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध में फाइलॉक्सेरा संकट के दौरान यूरोपीय बेलों को अधिक प्रतिरोधी अमेरिकी रूटस्टॉक पर कलमबद्ध करके उसका सामना किया। इस बदलाव से कई पारंपरिक किस्में बच सकीं। उद्योग में उस घटना का अक्सर दबाव के बीच अनुकूलन के उदाहरण के तौर पर उल्लेख किया जाता है।

यह तुलना उत्पादकों के सामने मौजूद मौजूदा आंकड़ों को नहीं बदलती। वाइनरी एक ही समय में उपभोक्ता कीमतों में गिरावट, कमजोर बिक्री और बढ़ती लागत से जूझ रही हैं। जिन कंपनियों का निर्यात में बड़ा हिस्सा है, उनके लिए विदेशी मांग में गिरावट खास तौर पर मुश्किल हो सकती है, क्योंकि क्षेत्र के आधे से अधिक राजस्व का स्रोत विदेशी बाजार हैं।

निर्यात के आंकड़े इसलिए भी अहम हैं, क्योंकि मूल्य और मात्रा—दोनों में गिरावट आई। निर्यात मूल्य में 6.2% और मात्रा में 4% की कमी से संकेत मिलता है कि उत्पादक न सिर्फ कम वाइन भेज रहे हैं, बल्कि बेची गई वाइन से उनकी

कमाई भी घट रही है। बढ़ती स्थिर लागत वाले बाजार में इसका मुनाफे पर असर पड़ता है।

उद्योग समूह महीनों से इन खर्चों के कुल प्रभाव को लेकर चेतावनी देते रहे हैं। बोतलबंदी में कांच एक प्रमुख इनपुट है। परिवहन और लॉजिस्टिक्स लागत घरेलू वितरण और अंतरराष्ट्रीय खेप—दोनों को प्रभावित करती है। पैकेजिंग सामग्री और वाइन बनाने में इस्तेमाल होने वाले उत्पाद भी दबाव बढ़ाते हैं, जबकि वाइनरी के पास इन लागतों का बोझ उपभोक्ताओं पर डालने की गुंजाइश सीमित है।

इस बीच, व्यापक महंगाई के माहौल से भी खास राहत नहीं मिली है। Financialounge के हवाले से दिए गए आंकड़ों के अनुसार, सितंबर में इटली में सामान्य कीमतें 4.2% की दर से बढ़ रही थीं, जबकि वाइन की कीमतें उलटी दिशा में जा रही थीं। यह अंतर दिखाता है कि इस क्षेत्र में कीमतों का समीकरण कितना असामान्य हो गया है।

आंकड़े यह भी रेखांकित करते हैं कि इटली की वाइन देश के बाहर बदलती उपभोक्ता आदतों पर कितनी निर्भर है। यदि वैश्विक खपत में गिरावट जारी रहती है, तो निर्यातकों को धीमी वृद्धि वाले बाजारों में हिस्सेदारी के लिए और कड़ी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ सकती है। ऐसे माहौल में बड़े और स्थापित उत्पादकों पर भी कीमतों, उत्पाद मिश्रण और वितरण को लेकर दबाव बढ़ सकता है।

फिलहाल, प्रमुख संकेतक एक ही दिशा में इशारा करते हैं: मांग में सुस्ती, उपभोक्ता कीमतों में गिरावट, उत्पादन और वितरण लागत में बढ़ोतरी तथा 2026 की पहली छमाही में कमजोर निर्यात प्रदर्शन। International Organisation of Vine and Wine के बताए परिदृश्य से संकेत मिलता है कि ये दबाव सिर्फ आर्थिक चक्र से नहीं, बल्कि लोगों के शराब पीने और खरीदारी की पसंद में लंबे समय से आ रहे बदलावों से भी जुड़े हैं।